एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी: इंदौर में वैज्ञानिक दृष्टिकोण से परिपूर्ण रही जैविक खेती की तकनीक

देवी अहिल्याबाई की वैज्ञानिक सोच : दिया औषधीय शोध को बढ़ावा...

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

इंदौर. देवी अहिल्या यूनिवर्सिटी के जनसंचार अध्ययनशाला ऑडिटोरियम में सोमवार को एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में देवी अहिल्याबाई के शासनकाल में वैज्ञानिक आयाम पर चर्चा हुई। मुख्य अतिथि पद्मश्री जगदीश जोशीला, विशिष्ट अतिथि डॉ अजय वर्मा थे। आइआइटी के प्रो. जीएस मूर्ति ने कहा कि जैविक खेती की शुरुआत इंदौर में अहिल्या शासनकाल में ही हुई थी।

अहिल्याबाई के दृष्टिकोण पर चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि उनकी हमेशा से ही वैज्ञानिक सोच रही है। अहिल्या शासनकाल में हुए काम विज्ञान को भी दिशा देने वाले साबित हुए हैं। इसके साथ ही औषधीय विषय में भी उन्होंने वैज्ञानिक सोच को हमेशा बढ़ावा दिया था।

संगोष्ठी में पद्मश्री जगदीश जोशीला ने कहा कि अहिल्याबाई होलकर हम सभी के लिए आदर्श रही है। उनके शासनकाल के दौरान जनता के हित और जनता के कल्याण के लिए बहुत सारे काम हुए हैं। देश के हर धर्मस्थल पर जाए तो वहां पर हमें अहिल्याबाई की ओर से कराए गए कई काम नजर आते हैं।

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय के कुलपति राकेश सिंघई ने कहा कि अहिल्या बाई होलकर ने अपने शासनकाल में विज्ञान और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को सबसे ज्यादा महत्व दिया है। जब हम उनके शासनकाल के समय के इतिहास को पढ़ते हैं तो हमें यह समझ में आता है कि अहिल्याबाई योग दृष्टा थी।

इस संगोष्ठी के दूसरे सत्र में माला ठाकुर, डॉ ममता रायकवार, ध्वनि शर्मा, डॉ अनुपम जैन और शोभा पेंढलकर ने भी कृषि क्षेत्र में अहिल्याबाई का योगदान बताया। संचालन डॉ अंगद ओझा ने किया। आभार सोनाली नरगुंदे ने माना।

इंदौर से बड़ी जैविक खेती की सोच

अहिल्याबाई ने अपने शासनकाल के दौरान जैविक खेती के लिए 25 एकड़ जमीन दी थी। उस समय पर जो जैविक खेती हुई थी, उसी ने देश में जैविक खेती का वातावरण बनाया। जैविक खेती के महत्व को वर्तमान में सही रूप में समझ रहे हैं। इसका महत्व अहिल्याबाई होलकर उसी समय पर समझ गई थी।